मार्च 2022

₹ 20

समाजवादी बुलेटिन

संघर्ष का जनादेश

R.N.I. No. 68832/97

www.samajwadiparty.in

समाजवादी पार्टी ही
सामाजिक न्याय की लड़ाई
लड़ सकती है और सभी को
अधिकार दिला सकती है।
जनता से जुड़े मुद्दों पर संघर्ष
जारी रखना होगा।
समाजवादी पार्टी में बड़ी
संख्या में युवाओं का होना
उत्साहवर्धक है। वे निराश हुए
बिना हर स्तर पर पार्टी को
मजबूत करने में जुट जाएं।

मुलायम सिंह यादव
संस्थापक-संरक्षक, समाजवादी पार्टी

समाजवादी बुलेटिन
मार्च 2022
वर्ष 23 | संख्या 05

प्रिय पाठकों,
आपकी प्रिय पत्रिका समाजवादी बुलेटिन बदले हुए कलेवर में अपने दूसरे वर्ष में प्रवेश कर चुकी है। आपके उत्साहवर्धन और प्रेम के कारण ही हमारा यह सफर यहां तक पहुंचा है। हम भरोसा दिलाते हैं कि हम आपकी उम्मीदों पर खरा उतरने की अपनी कोशिशों में कोई कमी नहीं आने देंगे। कृपया हमेशा की तरह आगे भी हमारा मार्गदर्शन करते रहें।
धन्यवाद!

प्रकाशक, मुद्रक एवं संपादक
प्रोफेसर रामगोपाल यादव
☎ 0522 - 2235454
samajwadibulletin19@gmail.com
bulletinsamajwadi@gmail.com
Mob:- 9598909095
/samajwadiparty

समाजवादी पार्टी के लिए
19, विक्रमादित्य मार्ग, लखनऊ से प्रकाशित
अवध पब्लिशिंग हाउस, 8 पान दरीबा, लखनऊ से मुद्रित

R.N.I. No. 68832/97

अंदर

अखिलेश बने विधानसभा में नेता विरोधी दल 12

06 कवर स्टोरी

संघर्ष का जनादेश

समाजवादियों की हार में जीत 14

समाजवादियों को लोकतंत्र के साथ होने वाले छल को रोकना होगा। विकास चाहिए लेकिन खेती और पर्यावरण के विनाश की कीमत पर नहीं। तरक्की चाहिए लेकिन बेरोजगार युवाओं को रोजगार के साथ चाहिए न कि पूंजीपतियों की धन वृद्धि के साथ

निराशा के कर्तव्य 18

मुफ्त राशन : क्या सचमुच प्राथमिकता में हैं गरीब 36

भाजपा राज में प्रहसन बना विधान परिषद चुनाव

बुलेटिन ब्यूरो

विधान परिषद के स्थानीय प्राधिकारी क्षेत्र के लिए हो रहे चुनावों में सत्तारूढ़ भारतीय जनता पार्टी सत्ता एवं प्रशासन का खुल कर माखौल उड़ा रही है। समाजवादी पार्टी के प्रत्याशियों को पर्चा भरने से रोकने के लिए कई स्थानों पर हमला, पर्चा छीनने, प्रशासन की मिलीभगत से विरोधियों का पर्चा रद्द करवाने जैसी भाजपा की कारस्तानियों ने चुनाव को प्रहसन बना दिया है। पंचायत चुनाव में जिस प्रकार भाजपाइयों ने लोकतंत्र को कलंकित किया था उसी प्रकार एक बार फिर विधान परिषद के चुनाव में भाजपा ने सत्ता का दुरुपयोग कर लोकतंत्र पर हमला किया है। भाजपा राज में लोकतंत्र खतरे में है। ये सत्ता का क्रूर चेहरा है। या तो पर्चा नहीं भरने दिया जाएगा या चुनाव को प्रभावित किया जाएगा, या फिर परिणामों को। हार का डर ही जनमत को कुचलता है।

इसी संदर्भ में समाजवादी पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री श्री अखिलेश यादव के निर्देश पर मुख्य निर्वाचन अधिकारी उत्तर प्रदेश लखनऊ को ज्ञापन देकर समाजवादी पार्टी के प्रतिनिधिमंडल ने मथुरा-एटा-मैनपुरी स्थानीय प्राधिकारी निर्वाचन क्षेत्र के लिए समाजवादी पार्टी के प्रत्याशी श्री उदयवीर सिंह व श्री राकेश यादव को जिला व पुलिस प्रशासन द्वारा बंधक बना लिये जाने, सपा कार्यकर्ताओं पर भाजपा के गुंडों द्वारा

पथराव किये जाने, सपा के दोनों प्रत्याशियों का नामांकन पत्र खारिज किये जाने की साजिश के विरुद्ध शिकायत की।

समाजवादी पार्टी प्रतिनिधिमंडल ने कई अन्य जनपदों में भी पार्टी कार्यकर्ताओं को नामांकन से रोकने जैसी घटनाओं के विरूद्ध तत्काल सख्त कार्रवाई किए जाने की मांग की है।

मुख्य निर्वाचन अधिकारी उत्तर प्रदेश को सौंपे गए ज्ञापन में कहा गया है कि प्रदेश में अराजकता का माहौल बन गया है और लोग भयभीत हो गए हैं। चुनाव प्रभावित हो रहा है और स्वतंत्र निष्पक्ष एवं निर्भीक चुनाव सम्पन्न होने में प्रश्नचिह्न लग रहा है।

प्रतिनिधिमंडल में सर्वश्री राजेन्द्र चौधरी राष्ट्रीय सचिव/प्रवक्ता समाजवादी पार्टी, अरविन्द कुमार सिंह सदस्य विधान परिषद, रविदास मेहरोत्रा सदस्य विधानसभा तथा के.के. श्रीवास्तव वरिष्ठ नेता समाजवादी पार्टी शामिल थे।

संघर्ष का जनादेश

उत्तर प्रदेश विधानसभा के चुनाव में समाजवादी पार्टी सरकार भले ही न बना पाई हो लेकिन उसकी सीटों की संख्या में ढाई गुना और वोट प्रतिशत में डेढ़ गुना वृद्धि उसकी बढ़ी हुई ताकत की ओर संकेत करती है। समाजवादी पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री अखिलेश यादव ने इन नतीजों को संघर्ष का जनादेश करार देते हुए कहा है कि समाजवादी पार्टी जनता से जुड़े मुद्दों को पहले की तरह ही प्रमुखता से उठाती रहेगी। श्री अखिलेश यादव ने उत्तर उत्तर प्रदेश में ही ज्यादा समय देकर भाजपा को आमने-सामने की चुनौती देने का निर्णय करते हुए आजमगढ़ की अपनी संसदीय सीट से इस्तीफा देकर करहल का विधायक बने रहने को प्राथमिकता दी है। उत्तर प्रदेश विधान मंडल में नेता विपक्ष के रूप में श्री अखिलेश यादव के नेतृत्व में समाजवादी पार्टी संघर्ष के इस जनादेश के दायित्व को बखूबी निभाएगी और इस संघर्ष का विस्तार सड़क तककरते हुए सरकार की जवाबदेही तय करेगी।

दुष्यंत कबीर

उत्तर प्रदेश की जनता ने विधानसभा चुनाव 2022 में अपने जनादेश से समाजवादी पार्टी को भाजपा का विकल्प मान लिया है। समाज के सभी वर्गों का समर्थन समाजवादी पार्टी के साथ है। इसी के फलस्वरूप ही जनता, कार्यकर्ताओं के सहयोग से समाजवादी पार्टी की सीटों की संख्या और उसे मिले मत प्रतिशत में वृद्धि हुई है। चुनाव के तुरन्त बाद बढ़ती महंगाई, खराब कानून व्यवस्था और बढ़ते अत्याचार से भाजपा के विरुद्ध जनता की नाराजगी और बढ़ गई है।

सच तो यह है कि भाजपा को संविधान और लोकतंत्र पर भरोसा नहीं है। वह छल-बल की राजनीति और धन-बल की ताकत की आजमाइश से सत्ता में बने रहना चाहती है। जिस तरह से भाजपा सरकार ने सरकार बनाई है वह किसी से छिपा नहीं है। नैतिक जीत समाजवादी पार्टी की है। भाजपा की ताकत पहले से घटी है।

प्रदेश की जनता बधाई की पात्र है। उसने 2022 चुनाव में अपने मत से भाजपा को सबक सिखाने का काम किया है। उसने प्रदेश की राजनीति में भाजपा के विकल्प के रूप में समाजवादी पार्टी को चुनकर देश की राजनीति में बदलाव का भी संकेत दे दिया है। राजनीति में अब एकाधिकारवादी ताकतों को मतदाता प्रश्रय नहीं देगा। वह समाजवाद, संविधान और लोकतंत्र को मजबूत करने के लिए अपनी प्रतिबद्धता समाजवादी पार्टी के साथ जाहिर करेगी। समाजवादी पार्टी अपनी भूमिका सक्रियता से निभाएगी।

प्रदेश की जनता बधाई की पात्र है। उसने 2022 चुनाव में अपने मत से भाजपा को सबक सिखाने का काम किया है। उसने प्रदेश की राजनीति में भाजपा के विकल्प के रूप में समाजवादी पार्टी को चुनकर देश की राजनीति में बदलाव का भी संकेत दे दिया है।

चुनाव नतीजों से जाहिर है कि जनता के बड़े वर्ग का भरोसा समाजवादी पार्टी पर है। सत्ताधारी याद रखे, छल से बल नहीं मिलता है।

पोस्टल बैलेट में समाजवादी पार्टी-गठबंधन को मिले 51.5 प्रतिशत वोट एवं उनके हिसाब से 304 सीटों पर हुई समाजवादी पार्टी -गठबंधन की जीत चुनाव का सच बयान कर रही है। वैसे भी उत्तर प्रदेश के मतदाताओं ने समाजवादी पार्टी की ढ़ाई गुना सीटें बढ़ाकर अपना रूझान जता दिया है और भाजपा की सीटों का घटाव भविष्य का संकेत है।

भाजपा की सच्चाई सबके सामने है। झूठ का भाजपाई व्यापार ज्यादा चलने वाला नहीं है। जनता ने अब आगे के लिए भी अपनी मंशा का संकेत दे दिया है। वर्ष 2024 में भाजपा को जनता करारा सबक सिखाएगी। समाजवादी

भाजपा को घटाना जारी रखेंगे

समाजवादी के राष्ट्रीय अध्यक्ष एवं पूर्व मुख्यमंत्री श्री अखिलेश यादव ने कहा है कि समाजवादी पार्टी विधानसभा चुनाव 2022 के जनादेश को जनता का सम्मान करते हुए स्वीकार करती है। हर एक छात्र, बेरोजगार युवा, शिक्षक, शिक्षामित्र, पुरानी पेंशन समर्थक, महिला, किसान, मजदूर और सभी शुभचिंतकों को धन्यवाद जिन्होंने समाजवादी पार्टी के प्रति विश्वास जताया है।

दिनांक 11 मार्च को जारी बयान में श्री अखिलेश यादव ने कहा कि समाजवादी-गठबंधन के जीते हुए सभी विधायकों को हार्दिक बधाई। सभी नए विधायकों द्वारा जनसेवा के अपने दायित्व का ईमानदारी से निर्वहन किये जाने की प्रतिबद्धता है।

उन्होंने कहा कि उत्तर प्रदेश की जनता को भी हमारी सीटें ढाई गुनी और मत प्रतिशत डेढ़ गुना बढ़ाने के लिए भी धन्यवाद। चुनाव परिणामों से स्पष्ट है कि भाजपा की सीटों को घटाया जा सकता है। भाजपा का यह घटाव निरन्तर जारी रहेगा।

भाजपा ने जो भ्रम और छलावा फैलाया है वह आधे से ज्यादा दूर हो गया है, बाकी कुछ दिनों में दूर हो जाएगा। समाजवादी पार्टी जनता की समस्याओं और विकास के मुद्दों को सदन के अंदर और बाहर मजबूती से उठाएगी। जनहित में संघर्ष अवश्य जीतेगा। समाजवादी पार्टी लोकतंत्र के लिए संकल्पित है।

दिनांक 23 मार्च को डॉ राम मनोहर लोहिया जयंती के अवसर पर श्री अखिलेश यादव ने कहा कि हमें जनता ने संघर्ष करने का जनादेश दिया है। हम सड़क से विधानसभा तक जनता के मुद्दे उठाएंगे और संघर्ष करेंगे। श्री अखिलेश यादव ने कहा कि डा. राम मनोहर लोहिया के संकल्प को जन-जन तक पहुंचाया जाएगा। उनकी नीतियों को आत्मसात कर महंगाई, बेरोजगारी और सामाजिक अन्याय के खिलाफ संघर्ष जारी रहेगा।

सपा अध्यक्ष ने कहा कि उत्तर प्रदेश के करोड़ों लोगों ने हमें नैतिक जीत दिलाकर जन आंदोलन का जनादेश दिया है। समाज में गैर बराबरी बढ़ी है। अमीर अधिक अमीर होते जा रहे हैं जबकि गरीबों की स्थिति बदतर हो रही है। नौजवान निराश होकर बेकार घूम रहे हैं। जनता के साथ अन्याय और अत्याचार की घटनाओं में बेतहाशा वृद्धि हो रही है। ऐसे में डॉ लोहिया के विचार बेहद प्रासंगिक हैं।

पार्टी अपने तमाम सहयोगियों और समर्थकों के साथ नई ऊर्जा और श्री अखिलेश यादव की प्रगतिशील सोच के साथ भविष्य की रणनीति बनाकर संघर्ष करती रहेगी।

चुनाव परिणाम आने के बाद ही से समाजवादी पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री अखिलेश यादव से दर्जनों नवनिर्वाचित विधायकों और समाजवादी पार्टी के गठबंधन के नेताओं के अतिरिक्त हजारों समर्थकों ने भी भेंट की। उन्होंने श्री अखिलेश यादव के नेतृत्व की सराहना करते हुए उनको अपना पूर्ण समर्थन देने का भरोसा दिलाया।

श्री यादव से भेंटकर्ताओं ने अपने-अपने निर्वाचन क्षेत्रों में चुनावों में हुई धांधली से अवगत कराया। वोटर लिस्ट में बड़ी तादाद में सपा समर्थकों के नाम चिह्नित कर काटे गए। ई.वी.एम. और सत्ता के दुरुपयोग की चर्चा हर तरफ हो रही हैं।

राजनीति की शुचिता भाजपाई छल-छद्म की राजनीति के चलते संकट में पड़ गई है। देश आजादी के 75 वर्ष में अमृत महोत्सव मनाने जा रहा है लेकिन स्वतंत्रता संघर्ष के जो मूल्य थे, वे नेपथ्य में हो गए हैं। लोकतंत्र का मूलाधार खतरे में है। राष्ट्र-राज्य को दिशा निर्देशन देने वाले संविधान की सुरक्षा में निर्वाचन आयोग की स्वतंत्र भूमिका आवश्यक है। चुनाव में

लोकतंत्र और संविधान की परीक्षा होती है। संसदीय जनतंत्र की सार्थक भूमिका बनाए रखने के लिए समाजवादी पार्टी पूरी ताकत से सदन और सदन के बाहर जनता की आवाज पुरजोर तरीके से उठायेगी।

विधानसभा में सदस्यों के शपथ ग्रहण के साथ ही श्री अखिलेश यादव ने जिम्मेदार विपक्ष की भूमिका निभाए जाने के संकेत दे दिए हैं। उन्होंने विधानसभा अध्यक्ष के सर्वसम्मति से निर्वाचन के बाद अध्यक्ष से अनुरोध किया कि विपक्ष को बोलने का अवसर मिलते रहना चाहिए।

फाइल फोटो

अखिलेश बने विधानसभा में नेता विरोधी दल

बुलेटिन ब्यूरो

समाजवादी पार्टी के नवनिर्वाचित विधायकों की दिनांक 26 मार्च को समाजवादी पार्टी प्रदेश मुख्यालय पर बैठक हुई। बैठक में श्री अखिलेश यादव को समाजवादी पार्टी विधायक दल और समाजवादी पार्टी विधानमंडल दल का नेता चुना गया। सपा विधानमंडल दल के इस निर्णय के आधार पर श्री अखिलेश यादव को विधानसभा में नेता विरोधी दल का दर्जा दिए जाने से संबंधित अधिकृत सूचना विधानसभा सचिवालय की ओर से जारी कर दी गई है।

उल्लेखनीय है कि विधानसभा चुनाव में श्री अखिलेश यादव करहल विधानसभा से चुनाव जीत कर विधायक निर्वाचित हुए हैं। चुनाव नतीजों के बाद उन्होंने करहल एवं अपनी संसदीय सीट आजमगढ़ के सपा नेताओं व कार्यकर्ताओं के साथ विस्तार से चर्चा करने के बाद लोकसभा सीट आजमगढ़ से इस्तीफा दिया और करहल से विधायक बने रहने का निर्णय किया।

उन्होंने दिनांक 28 मार्च को विधान सभा की सदस्यता की शपथ भी ले ली।

समाजवादी पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री अखिलेश यादव को समाजवादी पार्टी के विधायक दल और विधानमंडल दल का सर्वसम्मति से नेता चुना गया। नवनिर्वाचित विधायकों की बैठक में विधायक दल के नेता का प्रस्ताव समाजवादी पार्टी के पूर्व मंत्री श्री अवधेश प्रसाद ने रखा जिसका अनुमोदन वरिष्ठ समाजवादी नेता श्री आलम बदी ने किया। विधानमंडल दल के नेता का प्रस्ताव

पूर्व कैबिनेट मंत्री श्री लालजी वर्मा ने किया, जिसका अनुमोदन पूर्व कैबिनेट मंत्री श्री राजेन्द्र चौधरी ने किया।

विधायक दल की बैठक में मौजूद सभी नवनिर्वाचित विधानसभा सदस्यों और वर्तमान विधान परिषद सदस्यों ने श्री अखिलेश यादव को नेता चुने जाने पर बधाई दी और उनका स्वागत किया। विधायकों ने श्री अखिलेश यादव के नेतृत्व की सराहना की। विधायकों ने उनके प्रति अपने अटूट विश्वास के प्रदर्शन के साथ कहा कि उनके नेतृत्व में वे समाजवादी पार्टी को मजबूती देने का काम करेंगे। विधायकों ने भरोसा दिलाया कि समाजवादी पार्टी श्री अखिलेश यादव के साथ पूरी निष्ठा से सदन से सड़क तक अन्याय के विरूद्ध संघर्ष करेगी।

बैठक को संबोधित करते हुए श्री अखिलेश यादव ने प्रदेश के मतदाताओं का समाजवादी पार्टी को भारी समर्थन देने के लिए आभार जताते हुए कहा कि विधानसभा चुनाव के परिणाम जनभावनाओं के अनुरूप नहीं आये लेकिन उससे निराश न होकर हम विपक्ष में रहकर लोकतंत्र में अपनी जिम्मेदारी का निर्वहन करेंगे।

उन्होंने कहा कि चुनाव में समाजवादी पार्टी ने सभी का मुकाबला किया। आरएसएस और भाजपा ने सत्ता का दुरुपयोग किया। सपा के समर्थकों के नाम वोटर लिस्ट से काटे गए। प्रशासन निष्पक्ष नहीं रहा। पोस्टल बैलेट से जीत को हार में बदल दिया गया। लोकतंत्र के साथ छल किया गया। भाजपा गुंडागर्दी करा रही है। राज्य की जनता परिवर्तन चाहती थी।

श्री यादव ने कहा कि भाजपा की सरकार बनते ही महंगाई चरम पर पहुंच गई। किसानों की आय दोगुनी नहीं हुई। रोजी-रोजगार है नहीं। नौजवान आत्महत्या कर रहा है। व्यापार चौपट है। बजट में केवल तीन माह के लिए गरीबों को सस्ता राशन देने का प्रावधान है। कानून व्यवस्था नदारद है। मुख्यमंत्री जी को बतौर मोहरा इस्तेमाल किया जा रहा है।

श्री अखिलेश यादव ने कहा कि समाजवादी पार्टी सदन से सड़क तक सरकार के अन्याय के खिलाफ संघर्ष करेगी। भाजपा-आरएसएस की लोकतंत्र में आस्था नहीं है। आरएसएस अधिनायकशाही है। उन्होंने कहा कि राज्य सरकार को जहां जनता के प्रति जवाबदेह होना होगा वहीं विधानसभा के प्रति भी सरकार को जवाब देना होगा। हमें विपक्ष के रूप में जनता की आकांक्षा को पूरा करना है। सदन में सरकार को घेरना है।

समाजवादियों की हार में जीत

अरुण कुमार त्रिपाठी
वरिष्ठ पत्रकार

समाजवादी पार्टी सत्ता परिवर्तन की लड़ाई भले नहीं जीत सकी लेकिन व्यवस्था परिवर्तन की लड़ाई में उसने मजबूती से कदम बढ़ाए हैं। समाजवादी पार्टी उन तमाम मुद्दों को जनता में ले जाने में कामयाब रही है जिसके लिए लंबी लड़ाई की जरूरत है।

जिस माहौल में चुनाव हुआ है उसके बाद जो माहौल बनने वाला है उसके बारे में फैज अहमद फैज ने ठीक ही कहा है:

निसार मैं तिरी गलियों के ऐ वतन की जहां
चली है रस्म कि कोई न सर उठा के चले.....
यूं ही हमेशा उलझती रही है जुल्म से खल्क,
न उनकी रस्म नई है न अपनी रीत नई
यूं ही खिलाए हैं हमने आग में फूल
न उनकी हार नई है न अपनी जीत नई॥

इन स्थितियों के बावजूद कई टिप्पणीकारों ने यह साफ तौर पर कहा है कि मोदी, योगी ने भले चुनाव जीता हो लेकिन अखिलेश यादव ने जनता का दिल जीता है। तमाम उकसावे के बावजूद अखिलेश यादव ने बेहद शालीनता से हर आरोप का जवाब दिया है। माहौल को सांप्रदायिक बनाने की सारी कोशिशों को उन्होंने नाकाम किया है और चुनाव आयोग की तमाम ढिलाई और पक्षपात को सहा है।

संघ परिवार, भारतीय जनता पार्टी, देश के सबसे ताकतवर पूंजीपतियों के सहयोग और केंद्र और राज्य सरकार की अपार शक्ति के आगे अपने छोटे छोटे दलों के सहयोगियों के साथ अगर समाजवादी पार्टी के गठबंधन ने 125 सीटें हासिल की तो यह कोई छोटी उपलब्धि नहीं है।

समाजवादी पार्टी को 32 प्रतिशत वोट मिले हैं लेकिन वह सत्ता तक नहीं पहुंच सकी।

फिर भी समाजवादी पार्टी के तकरीबन तीस साल के इतिहास में यह उसका सर्वाधिक मत प्रतिशत है। साल 2012 में जब सपा की सरकार बनी थी तब उसे 29.13 प्रतिशत वोट हासिल हुए थे।

इसी उपलब्धि पर टिप्पणी करते हुए समाजवादी पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष अखिलेश यादव ने कहा भी है कि हमारी सीटें ढाई गुना और वोट प्रतिशत दो गुना करने के लिए जनता का धन्यवाद। इससे साबित हुआ है कि भाजपा की सीटों को घटाया जा सकता है। आधे से ज्यादा भ्रम और छलावा दूर हो गया है। बाकी कुछ दिनों में दूर हो जाएगा।

उनके दूसरे ट्वीट में तंज और रहस्य भी छुपा हुआ है। उनका यह कहना कि –पोस्टल बैलेट डालने वाले उस सच्चे सरकारी कर्मी, शिक्षक और मतदाता का धन्यवाद जिसने पूरी ईमानदारी से हमें वोट दिया। सत्ताधारी याद रखें छल से बल नहीं मिलता। डाक मत पत्रों में सपा को 51.5 प्रतिशत वोट मिले। उनके हिसाब से 304 सीटों पर हुई सपा की जीत चुनाव का सच बयान कर रही है।

इस संदेह को और गहरा करते हुए सपा नेता स्वामी प्रसाद मौर्य ने तो ईवीएम पर सवाल उठा दिए। उनका कहना है कि बैलेट पेपर वोटिंग में सपा जीती। भाजपा को सिर्फ 99 सीटों पर जीत मिली है। बात भाजपा या सपा की जीत की नहीं है। यह बात लोकतंत्र की है। भाजपा को जीत कैसे मिली यह बड़ा सवाल है।

चुनाव के बाद आए पूर्वांचल के चुनाव अधिकारी और लखनऊ उत्तर से सपा उम्मीदवार पूजा शुक्ला के वीडियो ने इस संदेह को और गहरा किया है। संदेह का यह वातावरण उस समय भी बना था जब मतगणना के ठीक एक दिन पहले वाराणसी, मिर्जापुर और बरेली में ईवीएम मशीनों से लदा ट्रक और बैलेट पेपर से पुलिंदे पकड़े और बरामद किए गए थे।

संदेह की इन स्थितियों के बारे में ब्रिटिश राजनीति शास्त्री डेविड रनसीमैन अपनी

आज हम जब भी लोकतांत्रिक संस्थाओं में निष्पक्षता की कमी, दायित्वबोध में ढिलाई और पक्षपात के दर्शन करते हैं तो रंसीमैन की बात याद आती है। उनके अध्ययन को आए चार साल ही हुए हैं और उस नजरिए से देखने पर दुनिया के कई देशों में लोकतंत्र पर संदेह के मंडराते बादल समझ में आने लगते हैं

प्रसिद्ध पुस्तक—हाउ डेमोक्रेसी एंड्स--- में बताते हैं कि इक्कीसवीं सदी में सेना के माध्यम से ही तख्तापलट नहीं होता। बल्कि उसके लिए ज्यादा नफीस तरीके अपनाए जाते हैं। वे अमेरिकी राजनीति शास्त्री नैंसी बरमेओ के हवाले से सैनिक तख्तापलट के अलावा पांच अन्य तरीके बताते हैं जिनके माध्यम से लोकतंत्र को खत्म किया जाता है।

कार्यपालिका की बगावत, यानी जो लोग पहले से सत्ता में हैं वे लोकतांत्रिक संस्थाओं को मुअत्तल कर देते हैं।

चुनाव के दिन होने वाली मतों की धोखाधड़ी, जब एक खास परिणाम हासिल करने के लिए चुनाव प्रक्रिया को निर्धारित कर दिया जाता है।

वचन निभाने वाली बगावत, जब लोकतंत्र पर खास लोगों का कब्जा हो जाता है और वे अपने शासन को वैधता दिलाने के लिए चुनाव करवाते हैं।

कार्यपालिका के अधिकारों का विवर्धन, जब सत्ता में बैठे लोग लोकतांत्रिक संस्थाओं को पूरी तरह से पलटे बिना उसकी शक्तियों को छीलते रहते हैं।

रणनीतिक चुनावी जोड़ तोड़, जब चुनाव पूरी तरह से स्वतंत्र और निष्पक्ष नहीं होता और पूरी तरह से उसे लूटा भी नहीं जाता।

बरमेओ के इन तरीकों पर टिप्पणी करते हुए डेविड रैंसीमैन कहते हैं कि जब लोकतंत्र में विकार पैदा हो जाता है तो इस तरह की बगावतों की संभावना ज्यादा प्रबल हो जाती है। ऐसे में लोकतंत्र को पूरी तरह से बर्खास्त करने की जरूरत नहीं पड़ती। इक्कीसवीं सदी में लोकतंत्र के लिए तब ज्यादा खतरा पैदा हो जाता है जब चुने हुए बाहुबली लोकतंत्र का बखान करते रहते हैं और उसे छीलते रहते हैं। उन्हें लगता है कि यह काम भारत, तुर्की, फिलीपींस, इक्वाडोर, हंगरी और पोलैंड में हो रहा है और संभव है कि अमेरिका में भी चल रहा हो।

आज हम जब भी लोकतांत्रिक संस्थाओं में निष्पक्षता की कमी, दायित्वबोध में ढिलाई और पक्षपात के दर्शन करते हैं तो रंसीमैन की बात याद आती है। उनके अध्ययन को आए चार साल ही हुए हैं और उस नजरिए से देखने पर दुनिया के कई देशों में लोकतंत्र पर संदेह के मंडराते बादल समझ में आने लगते हैं।

फाइल फोटो

उत्तर प्रदेश में भाजपा की योगी सरकार के विरुद्ध जनाक्रोश था इससे इनकार नहीं किया जा सकता। उसके प्रमाण सीएसडीएस लोकनीति के उस सर्वेक्षण में भी मिले हैं जिसमें 43 प्रतिशत मतदाताओं ने माना है कि इस सरकार के कामों से सिर्फ उच्च जाति के लोगों को लाभ हुआ है। निश्चित तौर पर बहुसंख्यकवाद के गहरे प्रभाव में मतदाता रहे हैं। वे हिंदुत्व की लहर से भी प्रभावित रहे हैं। उन पर लाभार्थी योजनाओं का असर भी पड़ा है। उन्हें अन्य पिछड़ा वर्ग का वोट भी मिला है। इसके बावजूद इस बात से इनकार नहीं किया जा सकता कि मंडल आयोग से उत्पन्न सामाजिक न्याय के विमर्श का प्रभाव अभी कायम है। भारतीय जनता पार्टी बढ़ चढ़ कर दावा करती है कि उसने मंदिर आंदोलन के माध्यम से बहुसंख्यक वोट बैंक तैयार कर लिया है। उसने पिछड़ी जातियों में काम करके मंडल का आधार भी अपनी ओर कर लिया है और वैश्वीकरण के मार्ग पर तो वह तेजी से चल ही रही है।

लेकिन उसके इन्हीं दावों के भीतर तमाम उलझनें और विडंबनाएं छुपी हुई हैं। कमंडल, मंडल और भूमंडल पर एक साथ दावा करने वाली भारतीय जनता पार्टी यह भूल जाती है कि यह तीनों नीतियां एक दूसरे को काटती हैं। कमंडल की लहर मंडल की लहर को काटने के लिए उठाई गई थी। भूमंडलीकरण की धारा भी मंडल की धारा को कमजोर करती है। कमंडल समाज के विशिष्ट माने जाने वाले तबके की सामाजिक श्रेष्ठता कायम करने के लिए लाया गया था तो भूमंडल मंडल के माध्यम से दिए जाने वाले आरक्षण को बेअसर करने के लिए। वैश्वीकरण और निजीकरण के माध्यम से सरकारी संस्थाओं और संगठनों का निजीकरण किया जा रहा है और इस तरह जहां भी आरक्षण का लाभ मिलने की गुंजाइश है उसे खत्म किया जा रहा है। इसी के साथ आरक्षण के सामाजिक आधार को कमजोर करके उसे आर्थिक आधार प्रदान किया जा रहा है।

इसीलिए समाजवादी पार्टी और उसके साथ गठबंधन में आए दलों ने जाति जनगणना का मुद्दा उठाया था और प्रदेश की तमाम पिछड़ी जातियों को उनका हक दिलाने की बात कही थी। गठबंधन का साफ कहना था कि जब तक जाति आधारित जनगणना नहीं हो जाती तब तक आरक्षण के साथ खेल करने और जातियों को आपस में लड़ाने का क्रम जारी रहेगा। जाति जनगणना के सही आंकड़े आ जाने के बाद सामाजिक उत्थान की योजनाओं को वैज्ञानिक तरीके से चलाया जा सकेगा। हालांकि समय कम होने के कारण पूरे समाज तक यह बात पहुंचाई नहीं जा सकी। लेकिन चुनाव परिणामों और पिछड़ी जातियों की ओर से गठबंधन में

व्यक्त किए गए विश्वास से पता चलता है कि मंडल की धार अभी कमजोर नहीं हुई है। जरूरत उसे नए रूप में नया अर्थ देने की है।

अल्पसंख्यक समाज ने समाजवादी पार्टी गठबंधन पर पूरा विश्वास किया है। यह बात तमाम चुनाव सर्वेक्षणों से प्रमाणित होती है। सीएसडीएस के एक सर्वेक्षण पर अगर यकीन किया जाए तो नतीजा निकलता है कि तकरीबन 80 प्रतिशत अल्पसंख्यकों ने सपा गठबंधन में यकीन जताया है। यह बात आजमगढ़, गाजीपुर, अंबेडकरनगर और कौशांबी के नतीजों से प्रमाणित होती है। सपा गठबंधन ने आजमगढ़ की सभी 10 सीटों पर, तो गाजीपुर की सातों सीटों पर, अंबेडकरनगर की पांचों सीटों पर और कौशांबी की तीनों सीटों पर कब्जा जमाया है। एक तरह से पूर्वांचल के कई जिलों में इस गठबंधन ने न सिर्फ जबरदस्त सत्ता विरोध का प्रदर्शन किया है बल्कि भाजपा का सूपड़ा साफ किया है। इससे सामाजिक न्याय और सामाजिक सद्भाव में तालमेल और डॉ लोहिया और डॉ आंबेडकर की विचारधारा में समन्वय साफ दिखता है।

अब सवाल यह है कि इस चुनाव में सपा गठबंधन के सत्ता तक न पहुंचने को किस प्रकार से देखा जाए। यहां डॉ राम मनोहर लोहिया का 60 साल पहले दिया गया भाषण याद आता है। उन्होंने 23 जून 1962 को नैनीताल में समाजवादी युवजन सभा के शिविर में निराशा के कर्तव्य नाम से बहुत प्रेरक और दार्शनिक भाषण दिया था। उन्होंने निराशा की तीन स्थितियां(राष्ट्रीय, अंतरराष्ट्रीय और मानवी) बताई थीं और उसी के साथ कर्तव्य की ओर संकेत किया था। राष्ट्रीय निराशा के कारण बताते हुए उन्होंने कहा था कि पिछले 1500 सालों में भारत की जनता ने कभी अंदरूनी जालिम के विरुद्ध विद्रोह नहीं किया। जनता झुकने की आदी हो गई है। उसे समन्वय का नाम दिया जाता है। भारत में क्रांति प्रायः असंभव हो गई है। यहां खास मात्रा में जलन या असंतोष नहीं है। लोग आधे मुर्दा हैं या भूखे या रोगी हैं।

समाजवादियों को लोकतंत्र के साथ होने वाले छल को रोकना होगा। विकास चाहिए लेकिन खेती और पर्यावरण के विनाश की कीमत पर नहीं। तरक्की चाहिए लेकिन बेरोजगार युवाओं को रोजगार के साथ चाहिए न कि पूंजीपतियों की धन वृद्धि के साथ

उस समय पर खीझते हुए उन्होंने कहा था कि इस वक्त हिंदुस्तान, हम लोग दुनिया में सबसे झूठे, सबसे आलसी और निकम्मे हो गए हैं। इसलिए उन्होंने कहा है कि भारत के शासक वर्ग को पहचानो। यह लंबे समय से स्थिर है। यहां के शासक बदलते रहते हैं लेकिन उनके साथ जुड़कर काम करने वाला वर्ग नहीं बदलता।

इसीलिए समाजवादियों का उद्देश्य सत्ता प्राप्ति का तो होना ही चाहिए साथ में समाज परिवर्तन का होना चाहिए। समाजवादियों को पैगंबरी भी करनी होगी और राजनीति भी करनी होगी।

डा लोहिया के यह प्रेरक शब्द आज साठ साल बाद भी गूंज रहे हैं। अगर हमें गैर-बराबरी और नाइंसाफी मिटानी है तो इस व्यवस्था के चरित्र को समझना होगा और उसे जनता को समझाना होगा। कोरोना जैसी महामारी के कारण लगी पाबंदियों और सत्तारूढ़ दल और सरकार के झूठ के आगे सच को अंतिम आदमी तक नहीं ले जाया जा सका है। लेकिन सच पराजित हो सकता है पर परास्त नहीं हो सकता। वह अगर 2022 में जनता तक नहीं पहुंच सका है तो 2024 तक जरूर पहुंचेगा।

जनता को रोटी चाहिए लेकिन उसके बदले स्वाधीनता नहीं छीनी जानी चाहिए। हमारे पुरखों ने हमें लोकतंत्र का जो मॉडल दिया है उसे समझाना और समझाना होगा।

डा राम मनोहर लोहिया, आचार्य नरेंद्र देव और जयप्रकाश नारायण ने बार बार कहा है कि गैर बराबरी मिटनी चाहिए, भूख मिटनी चाहिए लेकिन उसके लिए लोकतंत्र नहीं मिटना चाहिए। समाजवादियों को लोकतंत्र के साथ होने वाले छल को रोकना होगा। विकास चाहिए लेकिन खेती और पर्यावरण के विनाश की कीमत पर नहीं। तरक्की चाहिए लेकिन बेरोजगार युवाओं को रोजगार के साथ चाहिए न कि पूंजीपतियों की धन वृद्धि के साथ। लोहिया ने समाजवादियों को निराशा के कर्तव्य अच्छी तरह से समझाए हैं। उन्हीं सूत्रों को पकड़ कर सत्ता प्राप्ति के साथ समाज परिवर्तन का लक्ष्य हासिल करना होगा।

(यह लेखक के अपने विचार हैं)

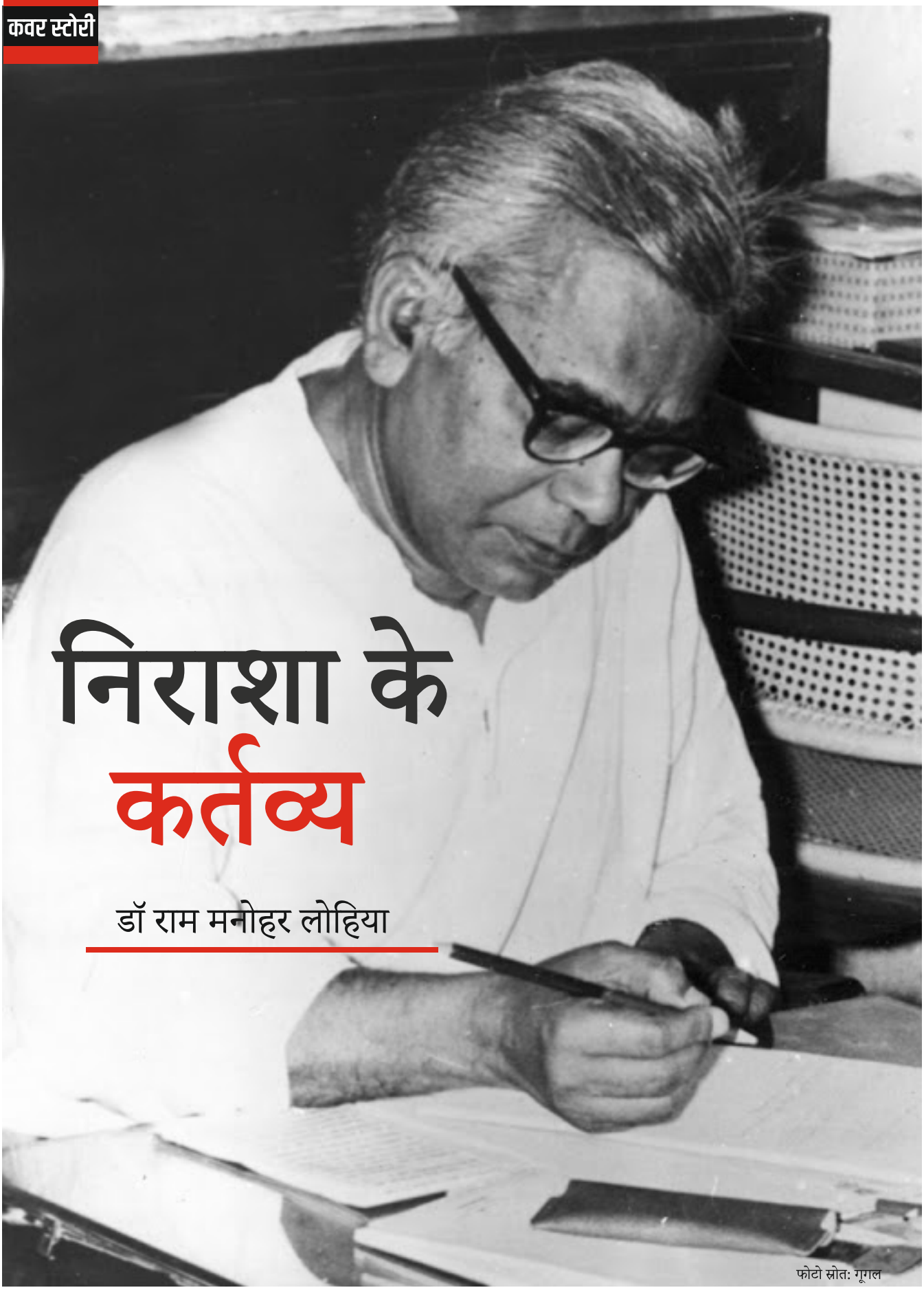

निराशा के कर्तव्य

डॉ राम मनोहर लोहिया

फोटो स्रोत: गूगल

डॉ राम मनोहर लोहिया का यह लंबा व्याख्यान आज के 60 साल पहले नैनीताल में समाजवादी युवजन सभा के शिविर में 23 जून 1962 को दिया गया था। समय के अनुसार उसमें इस्तेमाल किए गए आंकड़े बदल गए हैं। इसलिए उसके उन हिस्सों को निकालकर उस लंबे व्याख्यान के एक हिस्से को यहां प्रस्तुत किया जा रहा है जो आज के समय में समाजवादियों को गैर बराबरी को मिटाने और जुल्मी शासन को पहचानने और उससे संघर्ष करने की प्रेरणा देता है।

मुझको काफी समय से तीन तरह की निराशा है। एक, राष्ट्रीय निराशा, दूसरी अंतरराष्ट्रीय निराशा और तीसरी मानवीय निराशा। सबसे पहले राष्ट्रीय निराशा की बात की जाए।

पिछले 1500 वर्षों में हिंदुस्तान की जनता ने एक बार भी किसी अंदरूनी जालिम के खिलाफ विद्रोह नहीं किया। यह कोई मामूली चीज नहीं है। इस पर कम लोगों ने ध्यान दिया है। कोई विदेशी हमलावर आए, उस वक्त यहां का देशी राज्य मुकाबला करे, वह बात भी अलग है। एक जो राजा अंदरूनी बन चुका है, देश का बन चुका है लेकिन जालिम है उसके खिलाफ जनता का विद्रोह नहीं हुआ यानी ऐसा विद्रोह जिसमें हजारों लाखों हिस्सा लेते हैं बगावत करते हैं। कानून तोड़ते हैं, इमारतों को तोड़ते हैं या उन पर कब्जा करते हैं, जालिम को गिरफ्तार करते हैं।

ये बातें 1500 बरस में हिंदुस्तान में नहीं हुईं। ऐसी घटनाओं के न होने के कारण और नतीजे एक दूसरे को मजबूत करते रहे हैं। तफसील में न जाकर मैं खाली इतना ही कहूंगा कि हिंदुस्तान की जनता का आज इस 1500 बरस के अभ्यास के कारण झुकना उसकी हड्डी और खून का अंग बन गया है। इसी झुकने को हमारे देश में बड़ा सुंदर नाम दिया जाता है कि हमारा देश तो बड़ा समन्वयी है, हम सभी अच्छी चीजों को अपने में मिला लिया करते हैं। वास्तव में समन्वय दो किस्म का होता है एक दास का समन्वय और दूसरा स्वामी का समन्वय। स्वामी या ताकतवर देश या ताकतवर लोग जब आपस में समन्वय करते हैं तो परखते हैं कि कौन सी पराई चीज अच्छी है, उसको किस रूप में अपना लेने से शक्ति बढ़ेगी और तब वो अपनाते हैं। नौकर या दास या गुलाम परखता नहीं है। उसके सामने जो भी चीज, पराई चीज आती है अगर वह ताकतवर है तो उसको अपना लेता है। वह झक मारकर अपनाना हुआ।

वास्तव में समन्वय दो किस्म का होता है एक दास का समन्वय और दूसरा स्वामी का समन्वय। स्वामी या ताकतवर देश या ताकतवर लोग जब आपस में समन्वय करते हैं तो परखते हैं कि कौन सी पराई चीज अच्छी है

अपने देश में 1500 बरस से जो समन्वय चला आ रहा है वह इसी ढंग का है। मैं नहीं कहता कि एकाध ऐसे भी उदाहरण नहीं मिलेंगे जो दूसरे किस्म के हों, लेकिन अधिकतर इसी ढंग का समन्वय हुआ। इसी का नतीजा यह होता है कि आदमी अपनी चीज के लिए स्वतंत्रता भी जिसका एक अंग है, अपनेपन, अपने अस्तित्व के लिए मरने मारने को तैयार नहीं रहता वह झुक जाता है और उसमें स्थिरता के लिए बड़ी इच्छा पैदा हो जाती है। चाहे जितना गरीब हो, चाहे जितना रोगी हो, शरीर चाहे सड़ रहा हो लेकिन फिर भी जान के लिए कितना जबरदस्त प्रेम आप अपने देश में पाओगे।

कोई भी काम करते हुए हमारे लोग घबड़ाते हैं कि जान चली जाएगी। चाहे जितने गरीब हैं हम लोग , लेकिन फिर भी एक-एक, दो-दो कौड़ी से मोह है। मुझे कुछ ऐसा लगता है कि आदमी जितना ज्यादा गरीब होता है, उसका पैसे के प्रति उतना ज्यादा अनुराग हो जाया करता है। एक विचित्र सी अवस्था हो गई है कि शरीर खराब, जेब खराब, लेकिन फिर भी पैसे और जान के लिए इतनी जबरदस्त ममता और अनुराग हो गया है कि आदमी कोई भी जोखिम उठाने को तैयार नहीं रहता।

जहां जोखिम नहीं उठाओगे वहां कुछ नहीं

रह जाता है, क्रांति असंभव हो जाती है। मुझको ऐसा लगता है कि अपने देश में क्रांति असंभव शब्द मैं इस्तेमाल नहीं करूंगा, प्रायः असंभव हो गई है। लोग आधे मुर्दा हैं, भूखे और रोगी हैं लेकिन संतुष्ट भी हैं। संसार के और देशों में गरीबी के साथ-साथ असंतोष है और दिल में जलन। यहां थोड़ी बहुत जलन इधर उधर हो तो हो, लेकिन कोई खास माला में जलन या असंतोष नहीं है।

इन सबका कारण ढूंढना इस विषय के अंतर्गत नहीं आता लेकिन एक मोटा सा कारण और शायद सबसे बड़ा कारण है जाति प्रथा। यह हमारे देश की एक विशिष्ट बात है जो शायद दुनिया में और कहीं नहीं। यह भी हमारे देश की एक विशिष्ट बात है कि गुलामी में हम सबसे आगे हैं। मैं नहीं कहता कि इन दोनों विशिष्टताओं का , जाति प्रथा और गुलामी का एक दूसरे से अन्योन्याश्रित संबंध है। मेरी राय में तो है, ऐसा संबंध है लेकिन बहस को अभी खोलकर जाति प्रथा के गुण अवगुण को जान लेना जरूरी है कि गैर बराबरी को जाति प्रथा मंत्र की ताकत देती है।

दूसरे देशों में गैर बराबरी को सिर्फ बंदूक की ताकत मिली रहती है। और देशों में गैर बराबरी को शासक लोग कायम रखते हैं ताकत के सहारे या लालच के सहारे। वहां की जनता उस गैर बराबरी को स्वीकार कर लेती है, मानती है इसलिए कि या तो कुछ आमदनी बढ़ती रहती है या इस कारण से कि उसे डर लगता है कि उस पर ताकत का इस्तेमाल हो जाएगा। इसलिए वह आधा परदा गैर बराबरी स्वीकारे रहती है। और जब वह नहीं स्वीकारती तब उस गैर बराबरी के खिलाफ बगावत कर दिया करती है। लेकिन अपने देश में लालच और बंदूक या हथियार के तरीकों के अलावा मंत्र का तरीका भी है।

यानी मंत्र की, शब्द की, दिमागी बात की, धर्म के सूत्र की इतनी जबरदस्त ताकत है कि जो दबा है, गैर बराबर है, आधा मुर्दा है, छोटी जाति का है, वह खुद अपनी अवस्था में संतोष पा लेता है। ऐसे किस्से हैं जो बतलाते हैं कि किस तरह जाति प्रथा ने प्रायः पूरी जनता को यह संतोष दे दिया है।

मैं समझता हूं हिंदुस्तान में सचमुच दिलजला आदमी पाना मुश्किल है, जैसा कि यूरोप में होता है। यूरोप में तो आदमी अकड़ जाता है। अंदरूनी जुल्म के खिलाफ उस तरह का उखड़ा आदमी यहां पाना मुश्किल है।

•••

किसी एक उपन्यासकार ने कहा कि हिंदुस्तान में तो क्रांति असंभव है। क्योंकि और जगहों पर जहां पर क्रांति होती है वहां पर गैर बराबरी सापेक्ष होती है, यानी बिल्कुल संपूर्ण गैर बराबरी नहीं होती है और

जिस देश में बिल्कुल गैर बराबरी हो जाए या या संपूर्ण गैर बराबरी हो जाए वहां इंकलाब नहीं होगा। जिस देश में गैर बराबरी की खाई बिल्कुल गहरी हो जाए...तो वहां की जनता क्रांति के लिए बिल्कुल नाकाबिल हो जाती है।

हिंदुस्तान में वह अवस्था हो गई है। एक तरफ आर्थिक गैर बराबरी और दूसरी तरफ समाज की या मंल की गैर बराबरी ने मिलकर यह अवस्था पैदा कर दी है कि साधारण जनता, बहुसंख्यक जनता के दिमाग में वह उखड़ापन नहीं रह गया है। उसमें संतोष आ गया है और क्रांति की संभावना बहुत कम दिखाई पड़ती है। यह है राष्ट्रीय निराशा। साल, दो साल, दस साल बीस साल, पचास साल की बात नहीं यह किसी एक कांग्रेसी नेता या महात्मा गांधी या किसी और के बस की बात नहीं, यह है पिछले 1,500 बरस की बात। वह कूड़ा बहुत दिनों का जमा हुआ है या दिमाग पर एक विशेष किस्म का जंग चढ़ा हुआ है और वह भी बहुत पुराना है कोई 1500 बरस का। यह कोई मामूली निराशा की चीज नहीं हुई।

•••

शासक वर्ग या राजा वर्ग का मतलब खाली सबसे बड़े लोग नहीं जो गद्दी पर बैठकर राज चलाते हैं या बादशाह या राजा कहलाते हैं। बल्कि वह जो उनके इर्द गिर्द जो भी एक राजा वर्ग रहता है। सूबों में या राजधानी में, व्यापार करने वाले या दिमाग वाले या राजशक्ति वाले । वह राजा वर्ग पहले दुश्मन से मुकाबला करता है और जब हार जाता है तब खुद भी उसके साथ घुल मिल जाता है। यह दो नंबर के राजा हिंदुस्तान में कभी खत्म नहीं हो पाते। एक नंबर वाला राजा तो बदलता रहता है। पठान गए, मुगल आया, मुगल गए, मराठा आया, मराठा गए अंग्रेज आया, अंग्रेज गए, जो कोई भी आया। पुश्तैनी गुलाम, दो नंबर के राजा, शासक वर्ग जो भी आप इनको कह लें इनकी कसौटियां बनाना बहुत मुश्किल होगी लेकिन मोटे तौर

राजा वर्ग पहले दुश्मन से मुकाबला करता है और जब हार जाता है तब खुद भी उसके साथ घुल मिल जाता है। यह दो नंबर के राजा हिंदुस्तान में कभी खत्म नहीं हो पाते। एक नंबर वाला राजा तो बदलता रहता है। पठान गए, मुगल आया, मुगल गए, मराठा आया, मराठा गए अंग्रेज आया, अंग्रेज गए, जो कोई भी आया

पर इनकी कसौटियां यह हैं कि इनकी मोटी आमदनी होती है और इनकी भाषा सामंती होती है। आज अंग्रेजी सामंती भाषा है और किसी जमाने में पुश्तैनी गुलाम के लिए फारसी रही होगी। यह शासक वर्ग पुश्तैनी गुलाम, दो नंबर के राजा बदलते नहीं। ये सब चीजों से मिलाप कर लेते हैं और हिंदुस्तान हर किसी तूफान के आगे झुक जाता है। झुकने का माध्यम यही शासक वर्ग है पुश्तैनी गुलाम।

•••

आज भी हिंदुस्तान राजनीतिक तबके का जो मुख्य नेता वर्ग है वह इसी गिरोह से निकलता है। उसके पिछलग्गू लोग चाहे दूसरे वर्गों में से निकल जाएं लेकिन वही सचमुच चलाने वाले हैं। ये लोग हिंदुस्तान की क्रांति को कभी आखिरी हद तक ले नहीं जाएंगे। बाकी जो जनता है उसमें लगता है क्रांति की शक्ति लगता है रह नहीं गई है। अजीब बात है जिनको क्रांति चाहिए उनके अंदर शक्ति है ही नहीं और शायद अचेत होकर उसकी चाह रखता ही नहीं है और जिसमें क्रांति कर लेने की शक्ति है उसको क्रांति चाहिए नहीं या तबियत नहीं है। यह मोटे तौर पर राष्ट्रीय निराशा की बात है। साथ में छोटी छोटी बातें और भी हैं कि हिंदुस्तानी झूठा होता है। समय का ख्याल नहीं रखता। बकवासी हो गया है। मेहनत करना नहीं जानता, आलसी हो गया है। इसमें कोई संदेह नहीं है कि इस वक्त हिंदुस्तान हम लोग दुनिया में सबसे झूठे, सबसे आलसी और सबसे निकम्मे हो गए हैं।

•••

इसलिए कुछ समय पहले मैंने कहा था कि समाजवादी दल की राजनीति में एक तरफ तो है सत्ता प्राप्ति या नेतागिरी और दूसरी तरफ है पैगंबरी।

इन सब बातों को समझकर , इस राजनीति को पकड़कर , पैगंबरी और राजनीति भी , सत्ता प्राप्ति और समाज परिवर्तन भी, नया भविष्य और उसके साथ साथ आज की दुनिया में गद्दी पर बैठने की अभिलाषा या न्याय के लिए मांग , उन सिद्धांतों को लेकर समाजवादी दल या कोई भी दल चलेगा तो संभवतः एक बात होकर रहेगी और अगर वह दल ज्यादा सच्चा है तो पैगंबरी की हिस्सा उसमें ज्यादा रहेगा ही।

अखिलेश फिर सक्रिय, सशक्त हुआ विपक्ष

विधानसभा चुनाव संपन्न होने के महज कुछ दिनों के अंदर ही समाजवादी पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री अखिलेश यादव फिर से सक्रिय हो गए हैं। लंबे चुनावी अभियान के बावजूद चुनाव नतीजों के बमुश्किल एक पखवाड़े के भीतर ही श्री अखिलेश यादव ने पहले सीतापुर और फिर आजमगढ़ का दौरा किया।

दिनांक 16 मार्च को श्री अखिलेश यादव ने सीतापुर पहुंचकर पूर्व मंत्री श्री नरेंद्र वर्मा जी के भाई, स्वर्गीय महेंद्र वर्मा जी को श्रद्धासुमन अर्पित किए एवं परिवार के शोक संतप्त सदस्यों से मिलकर संवेदना प्रकट की।

सीतापुर में श्री अखिलेश यादव ने यूपी चुनाव में सपा के प्रदर्शन पर मीडिया से कहा, 'जो चुनाव हुआ है उसमें समाजवादियों की नैतिक जीत हुई है। समाजवादी कार्यकर्ताओं और नेताओं के संघर्ष और जनता के सहयोग से समाजवादी पार्टी बढ़ रही है और भाजपा घटी है, हमारी सीटें और वोट प्रतिशत बढ़ा है।'

महंगाई-बेरोजगारी जैसे मुद्दों को उठाते हुए पूर्व मुख्यमंत्री अखिलेश यादव ने कहा, 'ऐसा परिणाम किसी ने नहीं सोचा था, कई लोगों ने जहर खा लिया, कई लोग शर्त हार गए, लेकिन इस परिणाम ने समाजवादियों को नैतिक जीत दिलाई है, भविष्य में सदन में जो भी कार्यवाही होगी उसमें

ANI

समाजवादियों की भूमिका दिखाई देगी।'

एक सवाल के जवाब में श्री अखिलेश यादव ने कहा कि अगर कश्मीर फाइल्स फिल्म बन सकती है तो लखीमपुर में जीप से कुचलने वाली घटना पर लखीमपुर फाइल्स क्यों नहीं बननी चाहिए।

वहीं 21 मार्च को आजमगढ़ के दौरे पर पहुंचे श्री अखिलेश ने जनपद के सभी प्रमुख सपा नेताओं से मुलाकात की। उन्होंने आजमगढ़ की जनता को धन्यवाद देते हुए मीडिया से बात करते हुए कहा कि इस जिले का परिणाम ऐतिहासिक रहा है। भाजपा की कोशिश रही कि आजमगढ़ में सपा को पीछे कर दे। लेकिन उन्हें हार का सामना करना पड़ा। दसों सीटें सपा को मिलीं। उन्होंने कहा कि हमारी सरकार भले ही न बनी हो लेकिन हम हारे नहीं हैं।

उन्होंने कहा कि सपा की सीटें बढ़ी हैं और वोट प्रतिशत भी बढ़ रहा है। इस बार हमने यह जाना है कि वोट प्रतिशत कैसे बढ़ेगा। आने वाले समय में जो चुनाव होगा उसमें न केवल भाजपा की सीटें कम होगी बल्कि उनका वोट घटाने का काम जनता करेगी। उन्होंने कहा कि इस बार जब प्रदेश की जनता ने बहुमत दिया है तो इस बार भाजपा झूठ बोलकर जनता को निराश न करे।

श्री अखिलेश यादव ने सभी को शुभकामनाएं देते हुए कार्यकर्ताओं से निराश न होने और पूरे उत्साह के साथ पार्टी की मजबूती में लग जाने को कहा।

18 वीं विधानसभा में सपा के नवनिर्वाचित सदस्य

श्री आजम खान,
रामपुर

श्री अखिलेश यादव,
करहल

श्री माता प्रसाद पाडें,
इटवा

श्री लालजी वर्मा,
कटेहरी

श्री आलम बदी,
निजामाबाद

श्री दुर्गा प्रसाद यादव,
आजमगढ़

श्री दारा सिंह चौहान,
घोसी

श्री रमाकांत यादव,
फूलपुर-पवई

श्री इन्द्रजीत सरोज,
मंझनपुर

श्री राम अचल राजभर,
अकबरपुर

श्रीमती गीता पासी,
सोरांव

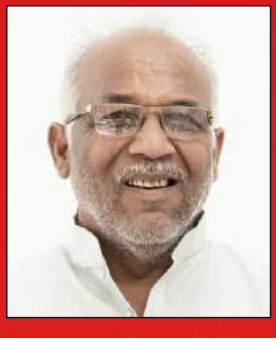

श्री अनिल वर्मा,
लहरपुर

श्री इकबाल महमूद,
संभल

स्वामी ओमवेश,
चांदपुर

श्री शाहिद मंजूर,
किठौर

श्री ओमप्रकाश सिंह,
जमनिया

श्री वीरेन्द्र यादव,
जंगीपुर

श्री सुहैब अंसारी,
मोहम्मदाबाद

पूजा सरोज,
मेहनगर

श्री हिमांशु यादव,
शेखूपुर

रेखा वर्मा,
बिधुना

श्री जय प्रकाश अंचल,
बैरिया

श्री गौरव कुमार,
जैदपुर

मो0 नासिर,
मुरादाबाद ग्रामीण

श्री धर्मराज सिंह यादव,
बाराबंकी

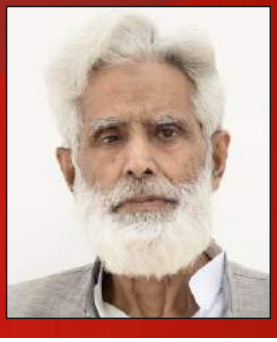

श्री नसिर अहमद खान,
चमरौआ

श्री देवेन्द्र प्रताप सिंह,
सरेनी

श्री महबूब अली,
अमरोहा

श्री अभय सिंह,
गोसाईगंज

पिंकी सिंह,
असमोली

श्री मनोज पारस,
नगीना

श्री राजेन्द्र कुमार,
मोहम्मदाबाद–गोहना

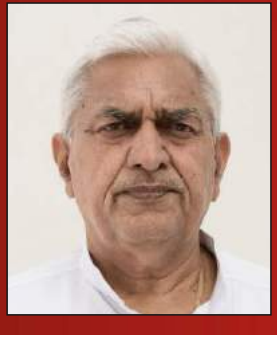

श्री विनोद चतुर्वेदी,
कालपी

श्री सर्वेश सिंह,
सिरसागंज

श्री सचिन यादव,
जसराना

श्री कमाल अख्तर,
कांठ

श्री विशम्भर सिंह यादव,
बबेरू

श्री पंकज पटेल,
मुंगरा बादशाहपुर

श्री आशु मालिक,
सहारनपुर

श्रीमती महाराजी प्रजापति,
अमेठी

श्री कमलकांत राजभर,
दीदारगंज

डा0 रागिनी सोनकर,
मछलीशहर

नफीस अहमद,
गोपालपुर

श्री ब्रजेश कठेरिया,
किशनी

श्री उमर अली खान,
बेहट

श्री आनन्द यादव,
कैसरगंज

.श्री त्रिभुवनदत्त,
अलापुर

श्री पंकज कुमार मालिक,
चरथावल

श्री चंद्रप्रकाश लोधी,
फतेहपुर

सैयदा खातून,
डुमरियागंज

श्री संग्राम सिंह,
फेफना

श्री लकी यादव,
मल्हनी

श्री मनोज पाण्डेय,
ऊंचाहार

श्री हृदय नारायण सिंह पटेल,
सगड़ी

श्री श्याम सुन्दर भारती,
बछरावां

नवाब जान,
ठाकुरद्वारा

श्री जाहिद बेग,
भदोही

श्री राकेश कुमार वर्मा,
रानीगंज

विजमा यादव,
प्रतापपुर

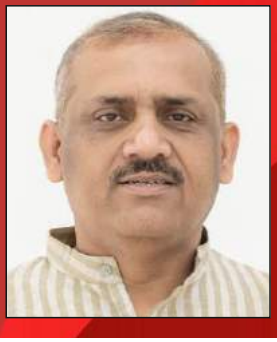

श्री अमिताभ बाजपेई,
आर्यनगर

श्री प्रभुनारायण यादव,
सकलडीहा

श्री राकेश प्रताप सिंह,
गौरीगंज

श्री अखिलेश यादव,
मुबारकपुर

श्री राममूर्ति वर्मा,
टांडा

श्री प्रदीप यादव,
दिबियापुर

श्री राघवेन्द्र कुमार सिंह,
भरथना

श्री मुकेश वर्मा,
शिकोहाबाद,

श्री शिवप्रताप यादव,
गैंसड़ी

पूजा पाल,
चायल

नादिरा सुल्तान,
पटियाली

श्री राकेश पांडे,
जलालपुर

श्री बेचई सरोज,
लालगंज

श्री अब्दुल्लाह आजम,
स्वार

श्री फहीम इरफान,
बिलारी

श्री अता उर रहमान,
बहेड़ी

श्री शहजिल इस्लाम,
भोजीपुरा

श्री तूफानी सरोज,
केराकत

इंद्राणी वर्मा,
भिनगा

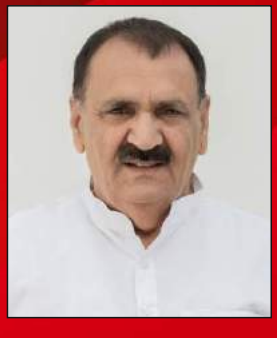

श्री समरपाल सिंह,
नौगांवा सादात

रफीक अंसारी,
मेरठ सिटी

श्री राम खिलाड़ी सिंह,
गुन्नौर

श्री अवधेश,
मिल्कीपुर

श्रीमती ऊषा मौर्या,
हुसैनगंज

मो. हसन,
कानपुर कैंट

अरमान खान,
लखनऊ पश्चिम

श्री राजेन्द्र प्रसाद चौधरी,
रूधौली

श्री महेन्द्र नाथ यादव,
बस्ती सदर

.श्री कवीन्द्र चौधरी,
कप्तानगंज

डा0 संग्राम,
अतरौलिया

श्री जिया उर रहमान,
कुंदरकी

श्री संदीप पटेल,
मेजा

मारिया शाह,
मटेरा

श्री इरफान सोलंकी,
सीसामऊ

श्री राहुल लोधी,
हरचंदपुर

तसलीम अहमद,
नजीबाबाद

श्री राम अवतार सिंह,
नूरपुर

श्री अतुल प्रधान,
सरधना

जियाउद्दीन रिजवी,
सिकन्दरपुर

श्री जयकिशन साहू,
गाजीपुर

फरीद महफूज किदवई,
रामनगर

श्री आशुतोष मौर्य,
बिसौली

ताहिर खान,
इसौली

ब्रजेश यादव,
सहसवान

अनिल प्रधान,
चित्रकूट

हाकिम लाल बिंद,
हंडिया

श्री राम सिंह,
पट्टी

श्री अंकित भारती,
सैदपुर

नाहिद हसन,
कैराना

श्री रविदास मेहरोत्रा,
लखनऊ मध्य

शिवपाल सिंह यादव , जसवंतनगर
पार्टी : प्रगतिशील समाजवादी पार्टी
चुनाव चिन्ह : साइकिल

पल्लवी पटेल , सिराथू
पार्टी : अपना दल कमेरावादी
चुनाव चिन्ह : साइकिल

रामपुर की जनता की कसौटी पर खरे उतरे
आजम साहब

बुलेटिन ब्यूरो

समाजवादी पार्टी के संस्थापकों में शामिल पार्टी के वरिष्ठ नेता मोहम्मद आजम खान साहब के खिलाफ भाजपा सरकार का उत्पीड़न भरा रवैया और साजिशें नाकाम रहीं। रामपुर की जनता ने आजम साहब को विधानसभा में अपना प्रतिनिधि चुनकर भेज दिया।

चूंकि भाजपा सरकार ने आजम साहब पर गलत मुकदमे लाद कर उन्हें कैद कर रखा है लिहाजा रामपुर की जनता ने खुद ही आजम साहब का चुनाव लड़ा और उन्हें भारी मतों से विजयी बनाया। सत्ता की साजिशों को नाकाम कर आजम साहब जनता की कसौटी पर खरे उतरे। खास बात यह है कि भाजपा ने जिस व्यक्ति को मोहरा बनाकर आजम साहब के खिलाफ फर्जी मुकदमे लगवाए हैं, चुनावों में आजम साहब ने भाजपा प्रत्याशी के तौर पर लड़ रहे उसी शख्स को जनता के आशीर्वाद से धूल चटा दी। आजम साहब ने 50000 से भी ज्यादा वोटों के भारी अंतर से भाजपा प्रत्याशी को हराया।

इन चुनावों में फिर एक बार साबित किया है सत्ता और सरकार चाहे लाख साजिशें करें जनता की अदालत में आजम साहब बेदाग थे, बेदाग हैं और आगे भी बेदाग रहेंगे। उल्लेखनीय है कि रामपुर विधानसभा की जनता के अथाह प्यार को सम्मान देते हुए आजम साहब ने रामपुर लोकसभा की सदस्यता से इस्तीफा देकर रामपुर की विधानसभा का सदस्य बने रहने का फैसला किया है। आजम साहब दसवीं बार रामपुर विधानसभा क्षेत्र के विधायक चुने गए हैं। इससे भी साबित होता है रामपुर की जनता उन्हें अपना कितना प्यार और समर्थन देती रही है।

चुनाव प्रचार के दौरान आजम साहब की अनुपस्थिति के मद्देनजर समाजवादी पार्टी के नेता व कार्यकर्ता क्षेत्र में मजबूती से प्रचार करते रहे।

उन्होंने जनता को बताया कि कैसे झूठे मामलों में फंसाकर आजम साहब और उनके परिवार के सदस्यों को परेशान किया जा रहा है। पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री अखिलेश यादव नेवी आजम साहब के समर्थन में रामपुर में चुनाव प्रचार किया।रामपुर की सियासत की जानकारी रखने वाले विश्लेषकों का मानना है कि चुनाव नतीजे इस बात की पुष्टि करते हैं कि इलाकाई जनता भी इससे सहमत है कि आजम साहब के साथ अन्यायपूर्ण व्यवहार हो रहा है।

इलाकाई लोगों का कहना है कि आजम साहब की चुनाव मैदान में अनुपस्थिति भले रही लेकिन उससे खास फर्क इसलिए नहीं पड़ा क्योंकि जनता ही उनका चुनाव लड़ती रही। जनता खुद ही बता रही थी और याद कर रही थी कि आजम साहब ने रामपुर के

फाइल फोटो

लिए कितना कुछ किया है। लिहाजा इस बार वोट की चोट कर उनसे हुए अन्याय के खिलाफ जनता ने अपना विरोध दर्ज कराया है।

रामपुर का जनादेश बता रहा है कि एक प्रतिष्ठित राजनीतिक परिवार के प्रति सियासी बदले की भावना से की जा रही कार्रवाई कतई बर्दाश्त नहीं जा सकती। लोगों ने सरकार की मनमानी का जवाब चुनावों में वोट के जरिए दिया है।

उल्लेखनीय है कि समाजवादी पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष एवं पूर्व मुख्यमंत्री श्री अखिलेश यादव कई मौकों पर कह चुके हैं कि आजम खान साहब के साथ जो व्यवहार भाजपा सरकार कर रही है वह अनैतिक एवं अमानवीय है। लोकतंत्र में सरकार का आचरण बिना राग द्वेष का होना चाहिए। भाजपा सरकार द्वारा समाजवादी पार्टी के नेताओं को अपमानित करने और यातना देने के लिए झूठे केसों में फंसाया जाता रहा है। भाजपा समझती है कि इससे समाजवादी पार्टी का मनोबल तोड़ा जा सकता है। भाजपा इसमें कभी सफल नहीं हो सकेगी।

आजम साहब वह शख्सियत हैं जिन्होंने आपातकाल में दो वर्ष तक जेल की यातना सही। वे 9 बार विधायक, 5 बार मंत्री और एक बार राज्यसभा सदस्य रह चुके हैं। रामपुर से दसवीं बार विधायक चुने जाने से पहले वह रामपुर से लोकसभा के सदस्य रहे हैं। उन्होंने तालीम के क्षेत्र में मोहम्मद अली जौहर विश्वविद्यालय रामपुर में स्थापित कर ऐतिहासिक काम किया।

मुफ्त राशन

क्या सचमुच प्राथमिकता में हैं गरीब?

फोटो स्रोत: गूगल

प्रेम कुमार
वरिष्ठ पत्रकार

उत्तर प्रदेश में भाजपा सरकार की दूसरी पारी का पहला बड़ा फैसला- मुफ्त राशन अब जून 2022 तक। अब यह 'मोदी का नमक' कहलाएगा या 'योगी का नमक'- यह 2024 के आम चुनाव के वक्त स्पष्ट होगा। दावों और भाषणों में इसे सरकार के गरीब हितैषी होने के तौर पर पेश किया जा रहा है।लेकिन, क्या वास्तव में यही सच्चाई है?

मुफ्त राशन से गरीब भी खुश, सरकार भी

मुफ्त राशन से गरीब खुश हैं। मगर, गरीबों से ज्यादा खुश हैं सत्ताधारी दल। ऐसे कदमों का कोई विरोधी नहीं होता। गरीबों को राशन देने की योजना का भला कौन विरोध करेगा? लेकिन, क्या वास्तव में योगी सरकार की प्राथमिकता में गरीब हैं?

अमल के इंतज़ार में रहेंगे जरूरी मुद्दे?

बेसहारा पशुओं से परेशान किसान बेहाल हैं, संविदाकर्मी नियमित होने का इंतज़ार कर रहे हैं, अनुदेशक 7 हज़ार रुपये के मानदेय को 17 हज़ार होने या फिर स्थायी होने के इंतज़ार में हैं, 16 लाख के करीब सरकारी रिक्तियां खाली पड़ी हैं; डीजल, बिजली, खाद और खेती के उपकरणों के महंगा होने से किसानों की खेती लगातार अलाभकारी होती चली जा रही है....लेकिन योगी सरकार 2.0 की प्राथमिकता में ये चिंताएं नहीं हैं।

योगी सरकार मतदाताओं को नमक का हक अदा करने के लिए धन्यवाद योजना पर काम कर रही है। आगे भी मतदाता नमक हलाल बने रहें, इसके लिए मुफ्त राशन योजना को विस्तार दिया गया है। लोकसभा चुनाव और शायद उससे आगे भी यह काम होता रहने वाला है। गरीबों को नमक हलाल बनाने की इस योजना को थोड़ा बेहतर तरीके से समझने की जरूरत है।

बेबसी में राशन से वाकई मिलती है राहत

हिटलर के मुंह से सुनाया जाने वाला एक मशूहर किस्सा है। एक मुर्गी को हाथ में लेकर उसका एक-एक चोआं हिटलर उघाड़ता चला जाता है। मुर्गी लहूलुहान हो जाती है। लहूलुहान मुर्गी को जमीन पर रखकर हिटलर उसके आगे अनाज का दाना छींटता है। मुर्गी दाना चुगने लगती है और हिटलर के पीछे-पीछे चलने लगती है। हिटलर मुस्कुराता है। कहता है- लोकतंत्र में लोग ऐसे ही पीछे-पीछे चलते हैं।

योगी सरकार का मुफ्त राशन का फैसला वास्तव में हिटलर की भी याद दिलाता है और लोकतंत्र के बारे में एक धारणा की भी। कोरोना काल में आम लोगों को मुफ्त राशन दिए जाएं- यह जरूरत निश्चित रूप से थी। आज भी यह जरूरत बनी हुई है। आगे भी बनी रहने वाली है। मगर, कब तक?- जब तक लोग आत्मनिर्भर न हो जाएं। तकलीफों से बेबस गरीब जनता आत्मनिर्भर कैसे हो। रोजगार या स्वरोजगार ही इसमें मददगार हो सकते हैं। लेकिन, योगी सरकार की योजना में रोजगार उपलब्ध कराना प्राथमिकता में नहीं है।

क्यों नहीं भरी जातीं 12 लाख से ज्यादा सरकारी नौकरी?

सेंटर फॉर मॉनिटरिंग इंडियन इकोनॉमी के मुताबिक यूपी में 29.72 लाख बेरोजगारों ने रोजगार खोजना बंद कर दिया है। यह संख्या रोजगार खोज रहे लोगों की संख्या 28.41 लाख से कहीं ज्यादा है। जब योगी सरकार ने पहली बार 2017 में शपथ ली थी तब 8 लाख सरकारी रिक्तियां थीं। जब दूसरी बार योगी सरकार ने शपथ ली है तो यह संख्या बढ़कर 12 लाख हो चुकी है। इसका मतलब यह है कि केवल सरकारी रिक्तियां अगर भर जाएं तो 42 फीसदी से ज्यादा रोजगार खोज रहे युवकों को नौकरी मिल सकती है।

योगी सरकार के पहले कार्यकाल के दौरान 16.13 लाख लोगों की नौकरी छिन गयी। ऐसा रोजगार में व्यस्त आबादी में आए अंतर के आंकड़ों से पता चलता है। हालांकि बेरोजगारी का प्रतिशत 3 से कम है। लेकिन, ऐसा इसलिए है क्योंकि रोजगार खोजने वाली आबादी घट गयी है। वे निराश होकर घरों में बैठ गये हैं।

कुपोषण दूर करने पर क्यों नहीं है ध्यान?

एक और महत्वपूर्ण बात यह है कि केंद्र सरकार के नवंबर 2020 के आंकड़ों

फोटो स्रोत: गूगल

के मुताबिक देशभर में गंभीर रूप से कुपोषित बच्चों की संख्या 9.28 लाख है। इनमें से 3.98 लाख कुपोषित बच्चे उत्तर प्रदेश में हैं। मतलब 43 फीसदी कुपोषित बच्चे उत्तर प्रदेश में ही हैं। सवाल यह है कि इस कुपोषण से लड़ाई में मुफ्त राशन से कितनी मदद मिलेगी? क्यों नहीं सरकार कुपोषण को खत्म करने की प्राथमिकता के साथ सामने आती है?

सरकार के अनुसार 15 करोड़ लोगों को मुफ्त राशन दिया जा रहा है। उत्तर प्रदेश की अनुमानित आबादी 23 करोड़ है। इस हिसाब से 65 फीसदी लोग मुफ्त राशन का लाभ ले रहे हैं। इसका मतलब यह भी है कि 65 फीसदी आबादी इतनी मुसीबत में है कि उन्हें जीने के लिए 5 किलो राशन की मदद चाहिए। यह राशन इस आबादी के लिए मरहम का काम जरूर करती रहेगी लेकिन भूख और गरीबी की समस्या का यह इलाज कतई नहीं है।

आमदनी बढ़ेगी मुश्किलें घटेंगी

उत्तर प्रदेश की प्रति व्यक्ति आय सालाना महज 70 हजार रुपये है। दिल्ली में प्रति व्यक्ति आय 4.1 लाख रुपये से ज्यादा है। कहने का अर्थ यह है कि दिल्ली से पौने छह गुणा कम आमदनी यूपी के लोगों की है। जब तक आमदनी नहीं बढ़ती है तब तक आम लोगों की मुश्किलें भी कम नहीं हो सकतीं।

प्रति व्यक्ति आय में बढ़ोतरी ही वह मानक है जो किसी सरकार के लिए सफलता का आधार कही जा सकती है। इस मामले में उत्तर प्रदेश का फिसड्डी रहना योगी सरकार की विफलता है। जब तक प्रति व्यक्ति आमदनी नहीं बढ़ती, कुपोषण के स्तर में सुधार नहीं होता और समग्र रूप में जीवन स्तर नहीं सुधर जाता तब तक मुफ्त राशन जरूरी भी है, मजबूरी भी। मगर, यह गर्व करने वाली बात कतई नहीं है।

होली के रंगों में नेताजी ने भरा

बुलेटिन ब्यूरो

रंगों के पर्व होली के अवसर पर सैफई में 18 मार्च को आयोजित समारोह में समाजवादी पार्टी के संरक्षक श्री मुलायम सिंह यादव एवं समाजवादी पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री अखिलेश यादव समेत परिवार के सभी सदस्यों ने लोगों को होली की बधाई दी। इस अवसर पर सैफई में भारी भीड़ जुटी। इस अवसर पर श्री मुलायम सिंह यादव ने पार्टी कार्यकर्ताओं में जोश भरते हुए कहा कि सपा पार्टी युवाओं की पार्टी है। यह पार्टी कभी बूढ़ी नहीं हो सकती। अभी हाल में हुए विधानसभा चुनाव में युवाओं ने बहुत मेहनत की है। जिसकी वजह से पार्टी को बहुत अच्छा वोट मिला है। अब लक्ष्य 2024 का है। मेहनत करके पार्टी को मजबूत करना है। 2024 में मेहनत करनी है और सांसद बनाने हैं। प्रदेश में सरकार भी आगे बनानी है। सभी को धन्यवाद, सभी को बधाई।

इससे पहले 17 मार्च को समाजवादी पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष एवं पूर्व मुख्यमंत्री श्री अखिलेश यादव

सेलखनऊ में सैकड़ों की संख्या में नेताओं, कार्यकर्ताओं, बुद्धिजीवियों और सामाजिक कार्यकर्ताओं ने भेंटकर होली की बधाई दी। समाजवादी पार्टी के नव निर्वाचित विधायकों ने भी श्री अखिलेश यादव को होली की शुभकामनाएं दीं।

नौजवानों ने अपने प्रिय नेता का अभिनंदन करते हुए उनके नेतृत्व में काम करते रहने का विश्वास दोहराया। शिक्षकों के एक दल ने भी मुलाकात की। अधिवक्ताओं ने भी भेंट की।

श्री अखिलेश यादव ने सभी को शुभकामनाएं देते हुए कार्यकर्ताओं से निराश न होने और पूरे उत्साह के साथ पार्टी की मजबूती में लग जाने को कहा।

डॉ लोहिया

समता संग समृद्धि के समर्थक

जयशंकर पाण्डेय

डॉ राम मनोहर लोहिया से अपनी पहली मुलाकात के बारे में वर्णन करते हुए रामधारी सिंह दिनकर लिखते हैं कि जब वर्ष 1934 में वे पटना में समाजवादी नेता फूलन प्रसाद वर्मा के घर पर डॉ लोहिया से मिले तो वे उद्वेगहीन और सीधे सादे नौजवान थे। उन्होंने कम बातें की और जो भी की उसमें बहुत विनम्रता थी लेकिन जब लोहिया संसद में पहुंचे तो वे बहुत उग्र हो चुके थे।

उनके भीतर गुस्सा था, उनकी चिंतन पद्धति जितनी विराट थी उतनी ही सामान्य थी। वे जवाहर लाल नेहरू पर बहुत कठोर प्रहार करते थे और उन्हें लगता था इस देश की जो भी समस्या है उसकी जड़ में कांग्रेस और जवाहर लाल नेहरू ही हैं। इसी पर दिनकर ने उनसे अनुरोध किया कि आप क्रोध को कम कर लीजिए वही आपके लिए अच्छा है। देश आपसे बहुत प्रसन्न है अब आपको छोटी छोटी बातों को लेकर कटुता नहीं पैदा करनी चाहिए। यह देश बड़ा ही कठिन है, कहीं ऐसा न हो कि भार जब आपके कंधों पर आए तब आपका अतीत आप की राह में कांटा बन जाए।

इस पर डॉ लोहिया ने बड़े उदासी भरे लहजे में कहा कि तुम क्या समझते हो कि उतने दिनों तक मैं जीने वाला हूं? मेरी आयु कम है इसलिए मैं जो बोलता हूँ उसे बोलने दो। शायद उन्हें अपनी मृत्यु का अहसास था कि इस बातचीत के एक महीने बाद ही वे महज 57 साल की आयु में दुनिया से विदा हो गए। लोहिया का गुस्सा नेहरू के प्रति था लेकिन वह इसलिए था कि उन्हें आम आदमी की गुरबत पसंद नहीं आती थी। उसे देखकर उनके मन में क्षोभ होता था। उन्हें दरिद्रता और बेचारगी से नफरत थी। वे उससे लड़ना चाहते थे और लड़े भी। वे महात्मा गांधी के अनुयायी थे और गरीबों के हमदर्द और रहनुमा थे लेकिन वे गांधी की तरह दरिद्रता का महिमामंडन नहीं करते थे। यहीं उनकी गांधी से असहमति थी।

भूख के इस कष्ट के प्रति लोहिया की संवेदनशीलता ही उन्हें और उनकी राजनीति को अमानुषिकता से दूर ले जाकर मनुष्यता से जोड़ती थी। वे समता के साथ समृद्धि के समर्थक थे और उन्होंने समाजवाद को इसी रूप में समझा और समझाया था लेकिन उनके लिए रोटी जरूरी थी तो स्वाधीनता भी उतनी ही जरूरी थी। वे दोनों में से एक को चुनने की बात नहीं करते थे और न ही कभी उन्हें विकल्प के रूप में देखते थे इसीलिए वे कभी सारी राजनीति एक किनारे रखकर स्तालिन की बेटी को भारत में शरण दिलाने के लिए संसद को झकझोर देते थे तो कभी अकाल के सवाल पर, कभी विद्यार्थियों के सवाल पर, कभी पुलिस के सवाल पर, कभी नागरिक स्वतंत्रता के प्रश्न पर टकराते हुए दिखते थे।

जो लोग लोहिया को गैर कांग्रेसवाद तक सीमित करते हैं वे न तो उनके सच्चे अनुयायी हैं और न ही उनके उचित व्याख्याकार। वे उनका इस्तेमाल करने वाले लोग हैं और उन्होंने अपनी तरक्की और स्थिति मजबूत करने के लिए उनका इस्तेमाल किया। लोहिया गैर-बराबरी और नाइंसाफी के विरूद्ध एक जलती हुई मशाल थे। आज अगर लोहिया होते तो वह मशाल और धधक रही होती। वह गैर भाजपावाद में बदल चुकी होती और वे मौजूदा अन्यायी और पाखंडी व्यवस्था से टकरा रहे होते।

जो लोग समाजवादियों पर यह इल्जाम लगाते हैं कि उन्होंने जनसंघ से गठबंधन किया और सांप्रदायिकता से समझौता किया वे गलत हैं। लोहिया ने कांग्रेस के अन्याय से लड़ने के लिए देश के सभी विपक्षी दलों को एकजुट किया था और उसमें कांग्रेस से निकले लोगों के साथ जनसंघ और कम्युनिस्ट भी थे। इतिहास गवाह है कि संविद सरकारों में कम्युनिस्ट भी शामिल थे। लेकिन लोहिया ने सांप्रदायिकता को कभी अपने पास फटकने नहीं दिया।

लोहिया भारत की क्रांतिकारी विरासत और महात्मा गांधी की सत्याग्रह की विरासत के बीच की कड़ी हैं। इसलिए वे भगत सिंह बनाम गांधी की बहस में नहीं पड़ते थे और न ही गांधी बनाम अम्बेडकर की बहस में पड़े थे। वे गांधी बनाम सुभाष की बहस में भी नहीं भटके थे

आज जो भी सच्चे अर्थों में समाजवादी हैं वे सांप्रदायिक शक्तियों से टकरा रहे हैं। अगर उत्तर प्रदेश में समाजवादी पार्टी के संस्थापक मुलायम सिंह यादव ने सांप्रदायिकता से मोर्चा लिया तो आज पार्टी के अध्यक्ष अखिलेश यादव भी उस विरासत को आगे बढ़ा रहे हैं। आज अगर लोहिया की विरासत को समझना है तो हमें स्वतंत्र भारत के साथ परतंत्र भारत में भी उनके योगदान को याद करना होगा। लोहिया भारत की क्रांतिकारी विरासत और महात्मा गांधी की सत्याग्रह की विरासत के बीच की कड़ी हैं। इसलिए वे भगत सिंह बनाम गांधी की बहस में नहीं पड़ते थे और न ही गांधी बनाम अम्बेडकर की बहस में पड़े थे। वे गांधी बनाम सुभाष की बहस में भी नहीं भटके थे।

उन्हें इतिहास के सत्पुरुषों का आदर करने की समझ थी और यह भी समझ थी कि इतिहास की कौन सी शक्ति उचित रास्ते पर जा रही है। भगत सिंह के साथ उनके जीवन के कुछ प्रसंग जुड गए थे और उन्हें आखिर तक दिल में बिठाए हुए थे। 23 मार्च का दिन डॉ लोहिया के जीवन में इसलिए विशेष महत्व रखता था कि इस दिन उनका जन्म हुआ था। लेकिन वह इसलिए भी महत्व का था कि इसीदिन भगत सिंह राजगुरू और सुखदेव को फांसी हुई थी। इसलिए वे अपना जन्मदिन नहीं मनाते थे।

जहां तक गांधी और डॉ अम्बेडकर का सवाल है तो वे गांधी के शिष्य थे लेकिन उनसे सवाल करने और असहमत होने में कोई कसर नहीं छोड़ते थे। वे गांधी की तरह औपनिवेशिक सत्ता के विरूद्ध संघर्ष को अनिवार्य मानते थे तो डॉ अम्बेडकर की तरह जाति व्यवस्था को मिटाना जरूरी समझते थे। इसीलिए डॉ0 अम्बेडकर के निधन पर उन्होंने कहा था कि वे डॉ अम्बेडकर को गांधी के बाद भारत का सबसे बड़ा मानव समझते हैं। उन्हें उनके होने से यकीन था कि एक दिन इस देश के जाति व्यवस्था समाप्त होकर रहेगी।

आज के दौर में बढ़ती सांप्रदायिक नफरत और निरंतर क्रूर होती सत्ता के विरूद्ध डॉ लोहिया के विचार और संघर्ष बहुत दूर तक प्रेरणा दे सकते हैं। अगर मानवीय गरिमा की हिफाजत करनी है और लोकतंत्र को नया जीवन देना है तो डॉ लोहिया के गुस्से को बचाकर रखना होगा।

(लेखक समाजवादी पार्टी के पूर्व विधायक हैं)

डॉ लोहिया के विचार आज भी प्रासंगिक

बुलेटिन ब्यूरो

समाजवादी पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष एवं पूर्व मुख्यमंत्री श्री अखिलेश यादव ने दिनांक 23 मार्च को लखनऊ स्थित लोहिया पार्क में प्रख्यात समाजवादी चिंतक डॉ राम मनोहर लोहिया की जयंती पर उनकी प्रतिमा पर पुष्पांजलि अर्पित किया।

समाजवादी पार्टी ने राजधानी लखनऊ में डॉ राम मनोहर लोहिया आयुर्विज्ञान संस्थान तथा पार्टी मुख्यालय सहित प्रदेश के सभी जनपद कार्यालयों में समाजवादी आंदोलन के महानायक डॉ राम मनोहर लोहिया की 112वीं जयंती पर उन्हें श्रद्धासुमन अर्पित किए।

श्री अखिलेश यादव ने उपस्थित समाजवादी पार्टी के नेताओं और कार्यकर्ताओं को सम्बोधित करते हुए कहा कि विधानसभा में उत्तर प्रदेश के करोड़ो लोगों ने हमें नैतिक जीत दिलाकर 'जन-आंदोलन का जनादेश' दिया है। समाजवादी पार्टी महंगाई, बेरोजगारी और सामाजिक अन्याय के खिलाफ संघर्ष के लिये प्रतिबद्ध है।

श्री यादव ने कहा कि समाज में गैर-बराबरी बढ़ी है। जनता के साथ अन्याय और अत्याचार की घटनाओं में बेतहाशा वृद्धि हो रही है। ऐसे में डॉ लोहिया के विचार बेहद प्रासंगिक हैं। कमजोर तबके को अधिकार एवं प्रतिनिधित्व समाजवादी व्यवस्था में ही सम्भव है। आधी आबादी को सुरक्षा एवं सम्मान दिलाना ही समाजवादी सिद्धांत है। समाजवादी पार्टी डॉ लोहिया के विचारों पर चलते हुए समतामूलक समाज की स्थापना के लिए प्रतिबद्ध है।

समाजवादी पार्टी को संघर्ष का जनादेश मिला है। समाजवादी पार्टी जनता के मुद्दों एवं समस्याओं को लेकर सदन से सड़क तक अपने कार्यक्रमों के माध्यम से संघर्ष करेगी।

बेनी बाबू को श्रद्धांजलि

बुलेटिन ब्यूरो

पूर्व केन्द्रीय मंत्री एवं सबके प्रिय 'बाबू जी' स्वर्गीय बेनी प्रसाद वर्मा जी की पुण्यतिथि पर 27 मार्च को समाजवादी पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष एवं पूर्व मुख्यमंत्री श्री अखिलेश यादव ने समाजवादी पार्टी कार्यालय लखनऊ में उनके चित्र पर पुष्पांजलि अर्पित की।

श्री अखिलेश यादव ने कहा कि समाजवादी पार्टी के वरिष्ठ नेता श्री बेनी प्रसाद वर्मा ने संगठन और सरकार दोनो जगह किसानों, पिछड़ों और वंचितों की आवाज उठाई और उनके लिए संघर्ष किया। उन्होंने समाजवादी आंदोलन को मजबूती दी।

इस अवसर पर राष्ट्रीय सचिव एवं पूर्व कैबिनेट मंत्री श्री राजेन्द्र चौधरी एवं प्रदेश अध्यक्ष श्री नरेश उत्तम पटेल ने भी स्वर्गीय बेनी बाबू को श्रद्धांजलि अर्पित की।

फार्म ४

(नियम ८ देखिए)

१	प्रकाशन का स्थान -	समाजवादी बुलेटिन, 19 विक्रमादित्य मार्ग, लखनऊ
२	प्रकाशन अवधि-	मासिक
३	मुद्रक का नाम-	प्रो. रामगोपाल यादव, सदस्य राज्यसभा
	(क्या भारत का नागरिक है)-	भारतीय
	(यदि विदेशी मूल है तो मूल देश)-	X
	पता-	46 ए फ्रेंड्स कालोनी, इटावा
४	प्रकाशक-	प्रो. रामगोपाल यादव
	(क्या भारत का नागरिक है)-	भारतीय
	(यदि विदेशी मूल है तो मूल देश)-	X
	पता-	46 ए फ्रेंड्स कालोनी, इटावा
५	संपादक-	प्रो. रामगोपाल यादव
	(क्या भारत का नागरिक है)-	भारतीय
	(यदि विदेशी मूल है तो मूल देश)-	X
	पता-	46 ए फ्रेंड्स कालोनी, इटावा
६	उन व्यक्तियों के नाम व पते जो समाचार पत्र के स्वामी हों तथा जो समस्त पूंजी के 1% से अधिक के साझेदार या हिस्सेदार हों।	समाजवादी पार्टी, 19 विक्रमादित्य मार्ग, लखनऊ

मैं प्रो. रामगोपाल यादव एतदद्वारा घोषित करता हूं कि मेरी अधिकतम जानकारी एवं विश्वास के अनुसार दिए गए विवरण सत्य हैं।

दिनांक- 1 मार्च 2022

प्रकाशक के हस्ताक्षर
प्रो. रामगोपाल यादव

साफ़ और बेबाक

Akhilesh Yadav
@yadavakhilesh

Socialist Leader of India. Chief Minister of UP (2012 - 2017)

Akhilesh Yadav
@yadavakhilesh

संकल्प ले रहे हैं आज सपा के 'एक सौ ग्यारह' जनता के मुद्दों पर संघर्ष करना ही लक्ष्य हमारा

Translate Tweet

Akhilesh Yadav
@yadavakhilesh

उप्र की जनता को हमारी सीटें ढाई गुनी व मत प्रतिशत डेढ़ गुना बढ़ाने के लिए हार्दिक धन्यवाद!

हमने दिखा दिया है कि भाजपा की सीटों को घटाया जा सकता है। भाजपा का ये घटाव निरंतर जारी रहेगा।आधे से ज़्यादा भ्रम और छलावा दूर हो गया है बाकी कुछ दिनों में हो जाएगा।

जनहित का संघर्ष जीतेगा!

Akhilesh Yadav
@yadavakhilesh

विधानसभा में उप्र के करोड़ों लोगों ने हमें नैतिक जीत दिलाकर 'जन-आंदोलन का जनादेश' दिया है। इसका मान रखने के लिए मैं करहल का प्रतिनिधित्व करूँगा व आज़मगढ़ की तरक़्क़ी के लिए भी हमेशा वचनबद्ध रहूँगा।

महंगाई, बेरोज़गारी और सामाजिक अन्याय के ख़िलाफ़ संघर्ष के लिए ये त्याग ज़रूरी है।

Translate Tweet

Akhilesh Yadav
@yadavakhilesh

अमर शहीद वीरांगना रानी अवंतीबाई लोधी जी की पुण्यतिथि पर कोटि-कोटि नमन एवं श्रद्धांजलि।

Translate Tweet

Akhilesh Ya
@yadavakhil

सपा-गठबंधन के जी
हार्दिक बधाई! सभी
व सहायता करने की
निभाएं!

उस हर एक छात्र, बे
शिक्षामित्र, महिला,
किसान, मज़दूर और
जिसने हममें विश्वास

Akhilesh Ya
@yadavakhil

पोस्टल बैलेट में सप
वोट व उनके हिसाब
सपा-गठबंधन की ज
रही है।

पोस्टल बैलेट डालने
सरकारीकर्मी,शिक्षक
जिसने पूरी ईमानदा

सत्ताधारी याद रखें,

Akhilesh Ya
@yadavakhil

बहुजन नायक, दलि
आजीवन संघर्ष करने
की जयंती पर उन्हें व

Following

dav
esh

ते हुए सभी विधायकों को
नये विधायक जनता की सेवा
ज़िम्मेदारी शत-प्रतिशत

रोज़गार युवा, शिक्षक,
पुरानी पेंशन के समर्थक,
र प्रोफेशनल को धन्यवाद
जताया।

dav
esh

ा-गठबंधन को मिले 51.5%
से 304 सीटों पर हुई
ीत चुनाव का सच बयान कर

वाले हर उस सच्चे
क और मतदाता का धन्यवाद
री से हमें वोट दिया।

छल से बल नहीं मिलता!

dav
esh

तों, पीड़ितों, शोषितों के लिए
ने वाले मान्यवर कांशीराम जी
कोटि-कोटि नमन।

Akhilesh Yadav
@yadavakhilesh

झाँसी में पुलिस की तरफ़ से कोई सुनवाई न होने से हताश होकर, छेड़खानी से परेशान शिकायतकर्ता दो बहनों का ज़हर खाने पर मजबूर होना दुखद है।सभी लिप्त अपराधियों-अधिकारियों के ऊपर तक जुड़े सरकारी-प्रश्रय की निष्पक्ष जाँच हो।बहन-बेटियों की सुरक्षा क़ानून-व्यवस्था का प्रथम सूचक होना चाहिए।

Translate Tweet

छेड़छाड़ से दुखी दो बहनों ने खा लिया जहर, पुलिस नहीं कर रही थी कार्रवाई

बड़ी बहन एमए फाइनल की छात्रा, छोटी बीएससी कर रही हैं, दोनों मेडिकल कॉलेज में भर्ती, अब हालत में सुधार

Akhilesh Yadav @yadavakhilesh · 1d

ग़ाज़ियाबाद में सरेआम पेट्रोल पम्प के 25 लाख रूपये की लूट व बिजनौर में राशन डीलर की हत्या उप्र की नयी भाजपा सरकार का अभिनंदन कर रही है।

भाजपा के राज में सरकार पेट्रोल से लोगों को लूट रही है और उप्र के बेख़ौफ़ अपराधी पेट्रोल पम्पवालों को। जनता पूछ रही है, ये कैसा परस्पर संबंध है।

Akhilesh Yadav
@yadavakhilesh

जनता को दिया भाजपा सरकार ने महंगाई का एक और उपहार... लखनऊ में रसोई गैस सिलेंडर हुआ हज़ार के पास और पटना में हज़ार के पार!

चुनाव ख़त्म, महंगाई शुरू...

Translate Tweet

LPG Price Today: 50 रुपये महंगा हुआ रसोई गैस सिलेंडर, जानें लखनऊ में क्या है रेट

Akhilesh Yadav
@yadavakhilesh

छुट्टा सांडों के जुल्म की कहानी:
यूपी में खुला घूम रहे 11 लाख से ज्यादा जानवर, मार्च में सांड के हमले से 2 लोगों की मौत

रक्षा सिंह 2 घंटे पहले

पंजीकृत डाक पंजीकरण संख्या GPO/LW/NP-300/2021-2023 कुल पृष्ठ : 48 डिस्पैच तिथि : 15, 16, 17

जिंदा कौमें पांच वर्ष इंतजार नहीं करतीं। वे किसी भी सरकार के गलत कदम का फौरन विरोध करती हैं।

- डॉ राम मनोहर लोहिया

समाजवादी पार्टी

www.samajwadiparty.in

/samajwadiparty